बहुत हो चुका नाटक

-अलखदेव प्रसाद अचल

बहुत हो चुका नाटक
अब तो रहने दो
तुम्हारे गिरगिट रंगों की पोल
खुल चुकी है
अपनी बात मुझे कहने दो।
तुम्हारा अंदाज
क्लाइमेक्स फ़िल्म या नाटक के कलाकरों से
कुछ कम नहीं था
चुनावी मंच पर
तुम्हारे जोशीले शब्दों के आगे
विरोधियों में दम नहीं था
देश प्रेम, हिन्दुत्व प्रेम
किसान और मज़दूर प्रेम की बाढ़
तुम्हारे हृदय में हिलो रें मार रही थी
लगता था कोई मोहिनी डोरे डाल रही थी
हम तो भोले-भाले थे
एक से त्रस्त थे
त्म्हारे चकाचौंध में मस्त थे
हमें तो विकल्प की तलाश थी
तुम्हारे वादों पर टिकी आस थी
लगा, शायद जो कह रहे हो
उस पर खरा उतर जायेगा
तो निश्चित रूप से वतन संवर जायेगा
परन्तु तुम्हारे सत्तारोहण के बाद
मेरे सारे सपने
रेत की दीवार की तरह ढह गये
शेष मलवे के नीचे दबकर रह गये
तुम्हारा अंदाज़ भी बदल गया
मेरा भी समय हाथ से निकल गया
फ़िल्म या नाटक के
अंत में ही सही
नायक खलनायक को
परास्त कर दकता है
कहानी के अनुसार
उसे समाप्त कर देता है
परन्तु तुम तो देश के खलनायकों के
सहायक दिख रहे हो
खुद नायक नहीं
खलनायक दिख रहे हो
कभी चिहाड़ा था
क्योंकि तुझे अपने सीने पर गरूर था
तुम्हारा सीना 56 इंच का जरूर था
परन्तु वक्त आते ही
तुम्हारे सीने ने यह साबित कर दिया कि
उसमें खून नहीं अपितु गंदा पानी है
त्म्हारे अन्दर सिर्फ़ नादानी है
तुम्हारा दिखावा
और तुम्हारे बोलने के अंदाज ने
यह साबित कर दिया
कि तुम एक नम्बर के हो दगाबाज
जो भी तुम्हारी बातों में आयेगा
वह निश्चित रूप से पछतायेगा

(साभार:प्रतिरोध का पक्ष)

जन के कवि रामफल जख्मी हमारे बीच नहीं रहे

जख्मी ने साक्षरता आंदोलन के दौर में पढ़ना लिखना सीखा और फिर मुड़ कर पीछे नहीं देखा । खाण्ड कसार और लाडली के अलावा और कई किस्से और सौ से अधिक गीत, रागनियों के रचनाकार हैं रामफल जख्मी जी ।

हरियाणा के सांस्कृतिक माहौल में पले बढ़े बहुत सारे ऐसे कलाकार हैं जो देश दुनिया में प्रदेश का नाम रोशन कर रहे हैं। लेकिन कुछ ऐसे कलाकार भी हैं जिन्हें भले देश दुनिया ना जानती हो लेकिन जमीनी स्तर पर जिन्होंने अपनी जगह बनाई और लोगों के जीवन को अपनी रचनाओं का आधार बनाया । उनके गीत उनका नाम जुबान पर आते ही मन नाचने लगता है। अपनी ही तरह की शख्सियत थे रामफल जख्मी । 17 अक्तूबर 1954 को हरियाणा के हिसार जिले के गंगणखेड़ी गांव में रामफल जख्मी जी ने जन्म लिया। उनके गीतों में दबे कुचले समाज का, स्त्रियों का दर्द उभर कर आता है। समाज के इन्हीं वंचित तबकों के जख्मों को लिखते लिखते शायद वे खुद भी रामफल से जख्मी हुए हों ऐसा लगता है ।

एक मजदूर जब लेबर चौक के लिये बाजार में अपना श्रम बेचने निकलता है तो उसकी कहानी क्या होती है जख्मी इस बारे में कुछ यूं लिखते हैं-

राजी खुशी की मत बूझै, बंद कर दे जिक्र चलाणा हे
दिन तै पहल्यां रोट बांध कै, पड़ै चौक म्हं जाणा हे
देखूं बाट बटेऊ ज्यूं, कोये इसा आदमी आज्या
मनै काम पै ले चालै, ज्या बाज चून का बाजा
नस-नस मैं खुशी होवै, जै काम रोज का ठ्याजा
इसे हाल म्हं मनै बता दे कौण सा राजी पाज्या
नहीं दवाई नहीं पढ़ाई नहीं मिलै टेम पै खाणा हेज

रामफल जख्मी जी का शुरुआती जीवन भी कुछ इसी तरह के अभावों में गुजरा । पढ़ने लिखने के नाम पर किसी प्रकार की औपचारिक शिक्षा उन्हें नहीं मिली थी बल्कि साक्षरता अभियान के दौरान अक्षर ज्ञान हासिल कर सांग, रागनी, गीत आदि लिखना और गांव-गांव उनकी प्रस्तुति देनी शुरु की। हरियाणा में औरतें पति की उम्र से बड़े व्यक्तियों से घूंघट करती हैं। स्वाभाविक है कि ऐसा वे अपनी मर्जी से नहीं, सामाजिक परंपराओं के तहत करती हैं। वर्तमान में हालांकि इस प्रथा में कुछ कुछ बदलाव होने लगे हैं। जख्मी जी इसे अपनी कविता में औरतों को दबाने का हथियार, औरतों को चुप रखने का कारण मानते हैं और चुप के पर्दे चुप की इस चुनरी को वे उतार फेंकने का आह्वान महिलाओं से करते हैं-

पाड़ बगा दयो बहना चुप की चुनरिया
इस चुंदड़ी नै गळे को घोट्या, जुल्म करे बोलण तै रोक्या
जकड़े राखी मैं, पिया की अटरिया
पाड़ बगा दयो चुप की चुनरिया
इस चुंदड़ी नै जुल्म गुजारया, चुंदड़ी मैं दुब क्या हाथ हमारा
खूब पिटाया हमें सारी हे उमरिया
पाड़ बगा दयो चुप की चुनरिया

किसानी जीवन का संघर्ष भी रामफल जख्मी ने अपने गीतों में दिखाया है-

ठा कै इतना भारी कसौला
बाड़ी का नुळावां खेत
कड़ा-कड़ बाजै कसौला
दोनों बच्चे साथ म्हं
आवै पसीना गात म्हं
गोड्यां चढ़ ज्या रेत
कड़ा-कड़ बाजै कसौला

इतना ही नहीं जिन कवियों, सांगियों, भजनियों ने महिला विरोधी गीत भजन रागनी लिखें हैं उन्हें भी वे अपने लपेटे में लेते हैं-

सांगी भजनी गीतकार नै भी, ढाए जुल्म छोरियां पै
त्रिया विष की बेल कही, न्यू कमाए जुल्म छोरियां पै
मर्द गिरया ज्यादा, दीखै कम, पाए जुल्म छोरियां पै
'रामफल सिंह' नए भेष म्हं, हो नए भेष म्हं
हो री आज नीलामी
इस स्वतंत्र देश म्हं, हो देश म्हं
क्यों भुगतै बीर गुलामी

सामाजिक अन्याय, भेदभाव, मजदूर तबकों का जीवन, शोषण उनकी रचनाओं में खूब झलकता है। उनके गीत एक बेहतर समाज की कल्पना करते हैं। बराबरी के समाज का सपना देखते हैं। जीवन-यापन के लिये वे सिंचाई विभाग में भी कार्यरत रहे। 14 मई की शाम एक लंबी बिमारी के बाद रामफल जख्मी जी का निधन हो गया। आज उनका शरीर वे वेशक हमारे बीच नहीं रहा। लेकिन उनके गीत हमेशा गूंजते रहेंगें। अपने जीवन काल में जख्मी जी कई किस्से और सौ अधिक मुक्तक रागनियां लिखी हैं। उनकी कुछ रचनाओं को देश हरियाणा पत्रिका के संपादक डॉ. सुभाष चंद्र ने अपनी किताब प्रतिनिधि रागनियां में संकलित भी किया है। हरियाणा राज्य संसाधन केंद्र रोहतक के साथियों ने एक मीटिंग की और रामफल जख्मी जी को याद करते हुए दो मिनट के मौन के साथ श्रद्धांजलि अर्पित की और शोकाकुल परिवार को इस दुख को सहन करने का साहस प्रदान हो ऐसी कामना की ।

- डॉक्टर रणबीर सिंह दहिया

वैवाहिक बलात्कार

तमाम स्त्रियाँ मन न होने पर भी पति को सेक्स के लिए मना नहीं कर पातीं हैं! शादी की पहली ही रात के बाद पता नहीं कितनी लड़कियों को अगले दिन अस्पताल ले जाना पड़ता है! पति पोर्न मूवी देखकर आता है और बिना सहमति के पत्नी के साथ वो तमाम पोजीशन ट्राई करता है जिसके लिए वो तैयार नहीं होती! लव बाइट्स के नाम पर पता नहीं कितने पुरुष अपने पार्टनर की देह को नोच डालते हैं! मैरिटल रेप भारत में रेप माना ही नहीं जाता! पत्नियाँ अपने पति की जबरदस्ती को कहें कैसे-पूरा समाज उन्हें ही उल्टा डांटेगा! पता नहीं कितनी लड़कियाँ सेक्स के लिए अपने बॉयफ्रेंड को रिश्तों के इमोशनल ब्लैकमेल के कारण मना नहीं कर पाती हैं! पता नहीं कितनी लड़कियाँ या पत्नियाँ सेक्स में अपनी मर्जी के हिसाब से प्लेयर इसलिए नहीं ले पातीं क्योंकि वो शुरू करेंगी तो उनके चरित्र पे शक करेगा उनका पार्टनर! पति का जब मने तब उसका है, लेकिन पत्नी पहल करे तो उसके चरित्र पे शक होने का डर! पता नहीं कितनी लड़कियों की 17-18 से भी कम उम्र में शादी हो जाती है...जाहिर है उनके साथ हुआ सेक्स बलात्कार ही है! ये सब फ्रीसेक्स नहीं है!

ये समाज फ्रीसेक्स शब्द से यूँ ही नहीं घबराता! फ्रीसेक्स सुनकर एकतरफ यौनकुंठा की लार भी टपकाता है और संस्कृति-नैतिकता की दुहाई भी देता है!

- ताराशंकर

कपाल क्रिया/लघु कथा

आज चाची को घायल अवस्था में देख कर कुछ वर्ष पहले उनसे हुआ वार्तालाप याद आ गया, जब उन्होंने मुझसे पूछा था -

बेटी, कितने बच्चे हैं तुम्हारे ?

दो बेटियाँ हैं।

बेटा नहीं है ? एक बेटा भी तो होना चाहिए।

दो बेटियाँ ही ठीक हैं, बस, आज के इस समय में दो बच्चों की जिम्मेदारी ठीक से निभा लें, यही बहुत है, चाची।

कुछ भी कहो, लेकिन मरने के बाद मूंह फोड़वे के लिए तो लड़का ही चाहिए।

इस समय चाची के घर के सामने भीड़ लगी है। अभी-अभी पुलिस चाची के बेटे को पकड़ कर ले गयी है। सम्पत्ति विवाद पर बेटे ने अपनी विधवा माँ यानि चाची का मूंह (सिर) जीते जी फोड़ दिया है।

- सविता इंद्र

घर बैठे प्राप्त करें मज़दूर मोर्चा

आज ही अपने हॉकर से कहें कोई दिक्कत हो तो शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर बात करें। बल्लभगढ के पाठक अरोडा न्यूज एजेंसी से 9811477204 पर बात करें:

अन्य बिक्री केन्द्र :

1. **आनंद मैगजीन सैंटर केसी रोड, एनएच-5,**
2. **प्रिंट फोर्ट टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड,**
3. **रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन,**
4. **रैंक, 45 नीलम चौक,**
5. **एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे,**
6. **राम खिलावन बल्लभगढ़ बस अड्डा पुलिस चौकी के सामने,**
7. **हितेश ग्रोवर सैक्टर 29 पेट्रोल पम्प के पास ।**
8. **जितेन्द्र, बाटा सैंटर - 9971064207**
9. **स्थानीय अदालतों में : चैम्बर नं. 56-एस.के .जोशी - वकील साहब**